आत्महत्या-विचार के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक स्थिति की भूमिका: एक मनो-सामाजिक मूल्यांकन

शोधार्थी
नरेंद्र सोनी
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध निर्देशक
डॉ. सरबेस सिंह
सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान)
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्थिति (सामाजिक-आर्थिक स्थिति) के आत्महत्या-विचार पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु किया गया। समाज में असमानता, आर्थिक दबाव, व्यावसायिक अस्थिरता तथा सामाजिक वंचनाएँ मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती हैं, जिसके परिणामस्वरूप आत्महत्या-विचार की संभावना बढ़ सकती है। इस अध्ययन में 400 विद्यार्थियों का चयन निम्न, मध्यम और उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर किया गया। *Suicidal Ideation Scale* तथा *Socio-Economic Status Index* का उपयोग करके मानक आँकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले किशोरों की तुलना में उच्च तथा निम्न दोनों ही सामाजिक-आर्थिक स्तरों पर अधिक है। अन्य शब्दों में, सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्यवर्ती स्तर पर आत्महत्या-विचार अपेक्षाकृत कम तथा ऊपरी और निचले दोनों छोरों पर अधिक परिलक्षित होती है। मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि तीनों समूहों में व्यक्तिगत भिन्नता का स्तर लगभग समान है, तथापि औसत अंकों में अंतर यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति आत्महत्या-विचार की तीव्रता से अर्थपूर्ण रूप से संबंधित है।

परिचय

आत्महत्या-विचार आधुनिक समाज में एक गंभीर मनोवैज्ञानिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार किशोरों और युवाओं में मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव, असमानता तथा पारिवारिक परिस्थितियाँ आत्महत्या-विचार के प्रमुख कारक हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति व्यक्ति के जीवन के अवसरों, संसाधनों, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, सामाजिक समर्थन तथा भावनात्मक सुरक्षा को परिभाषित करती है। निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग आर्थिक अनिश्चितता, बेरोज़गारी, असुरक्षा, सामाजिक बहिष्करण तथा संसाधनों की कमी का सामना करते हुए उच्च मानसिक दबाव में जीवन बिताते हैं, जिसके कारण उनमें आत्महत्या-विचार की संभावना बढ़ जाती है।

मध्य और उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग में भी प्रतिस्पर्धा, अपेक्षाओं और उपलब्धि तनाव जैसी मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ मौजूद हैं, परंतु संसाधन-सुलभता, सामाजिक सुरक्षा और भावनात्मक समर्थन तुलनात्मक रूप से अधिक होने के कारण आत्महत्या-विचार की तीव्रता अपेक्षाकृत कम देखी जाती है। इस अध्ययन का उद्देश्य तीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति स्तरों के विद्यार्थियों में आत्महत्या-विचार के अंतर और प्रभाव का परीक्षण करना है।

संबंधित शोध-अध्ययन

1. सिंह एवं जोशी (2017) – सामाजिक-आर्थिक स्थिति और किशोर मानसिक संकट

इस अध्ययन में उत्तर भारत के 450 किशोरों पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति और आत्महत्या-विचार के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग के विद्यार्थियों में आत्महत्या-विचार का स्तर सर्वाधिक था, जबकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग में यह स्तर उल्लेखनीय रूप से कम पाया गया। आर्थिक अभाव, पारिवारिक तनाव, शिक्षा-संसाधनों की कमी तथा सामाजिक उपेक्षा को आत्महत्या-विचार के प्रमुख कारक के रूप में पहचाना गया। अध्ययन ने स्पष्ट किया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक निर्णायक जोखिम-सूचक है और सहायक नीति हस्तक्षेपों की आवश्यकता है।

2. वर्मा (2019) – आर्थिक वंचना और आत्मघाती प्रवृत्ति

400 विद्यार्थियों के नमूने पर किए गए इस अध्ययन ने आर्थिक स्थिति और भावनात्मक असुरक्षा के मध्य संबंध का विश्लेषण किया। जिन विद्यार्थियों के परिवारों में आर्थिक वंचना, बेरोज़गारी, ऋण संकट और सामाजिक बहिष्कार का अनुभव था, उनमें आत्महत्या-विचार का स्तर अत्यधिक पाया गया। अध्ययन से पता चला कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में तनाव, निराशा और भविष्य के प्रति असुरक्षा आत्महत्या-विचार को बढ़ाने वाले प्रमुख मनो-सामाजिक कारक हैं। अध्ययन उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग को तुलनात्मक रूप से सुरक्षित समूह के रूप में दर्शाता है।

3. गुप्ता और शर्मा (2020) – सामाजिक-आर्थिक स्थिति , पढ़ाई का दबाव और आत्महत्या के विचार

इस भारतीय अध्ययन में 11वीं–12वीं कक्षा के 300 विद्यार्थियों पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति , शैक्षिक दवाब और आत्महत्या-विचार के संबंध का परीक्षण किया गया। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह के विद्यार्थियों में आर्थिक असुरक्षा के साथ-साथ शैक्षणिक उपलब्धि का दवाब अत्यधिक होने के कारण आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में माता-पिता की अपेक्षाओं का दबाव प्रमुख भूमिका में पाया गया। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में आत्महत्या-विचार का स्तर सबसे कम था, जिसका कारण संसाधन-सुलभता और भावनात्मक समर्थन बताया गया।

4. विलियम्स एट अल. (2018) – सामाजिक-आर्थिक असमानताएं और युवा आत्महत्या (USA)

संयुक्त राज्य अमेरिका में 1,200 किशोरों पर किए गए इस अध्ययन ने यह दर्शाया कि आर्थिक असमानता सीधे-सीधे आत्महत्या-विचार से संबंधित है। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह के युवाओं में सामाजिक बहिष्कार, परिवारिक अस्थिरता, हिंसक पड़ोस और स्वास्थ्य-सेवाओं की कमी के कारण आत्महत्या-विचार 2.5 गुना अधिक पाया गया। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग में सामाजिक-भावनात्मक समर्थन तथा काउंसलिंग सेवाओं की उपलब्धता ने आत्महत्या-विचार की तीव्रता को कम किया। अध्ययन सामाजिक-असमानता को आत्महत्या के "structural determinant" के रूप में पहचानता है।

5. लोपेज़ और मार्टिनेज़ (2021) – आर्थिक तनाव और मनोवैज्ञानिक जोखिम (स्पेन)स्पेन में किए गए इस अध्ययन में आर्थिक तनाव, आय-अस्थिरता और आत्महत्या-विचार के बीच संबंध का परीक्षण किया गया। परिणामों से पता चला कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में आर्थिक अनिश्चितता, पारिवारिक विवाद और कार्य-असुरक्षा के कारण आत्महत्या-विचार का स्तर अत्यधिक था। मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में कार्य प्रतिस्पर्धा और सामाजिक छवि की चिंता को आत्महत्या-

विचार का प्रमुख कारक बताया गया। अध्ययन ने निष्कर्ष दिया कि आर्थिक स्थिरता मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक मजबूत सुरक्षात्मक कारक है।

6. देवांगन और पांडे (2022)– छत्तीसगढ़ के युवाओं में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और भावनात्मक असुरक्षा

छत्तीसगढ़ के 320 युवाओं पर किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले युवाओं में आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वर्ग की तुलना में कहीं अधिक थी। अध्ययन बताता है कि आर्थिक अभाव के साथ-साथ पारिवारिक समर्थन की कमी, नशा-प्रवृत्ति, बेरोज़गारी तथा सामाजिक दबाव जैसे कारक आत्महत्या-विचार को बढ़ाते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह में माता-पिता का आत्मीय समर्थन और परामर्श सेवाओं की उपलब्धता आत्महत्या-विचार को कम करने वाले कारक के रूप में पहचाने गए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. निम्न, मध्यम और उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों में आत्महत्या-विचार का स्तर जानना।
2. तीनों सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूहों के बीच आत्महत्या-विचार में सार्थक अंतर का परीक्षण करना।
3. यह मूल्यांकन करना कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति आत्महत्या-विचार का महत्त्वपूर्ण पूर्वानुमानकर्ता है या नहीं।

परिकल्पनाएँ

H_0 (शून्य परिकल्पना): सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर आत्महत्या-विचार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_1 (वैकल्पिक परिकल्पना): सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर आत्महत्या-विचार में सार्थक अंतर है, तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति में आत्महत्या-विचार अधिक पाया जाता है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श (Sample)

शोध में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के 400 उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रतिचयन पद्धति: स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन (Stratified Random Sampling)

शोध उपकरण (Tools)

1. **Socio-Economic Status Index** (2018 संस्करण)
2. **Suicidal Ideation Scale (Beck Adapted Version, 2015)**
   दोनों उपकरणों की विश्वसनीयता (reliability) .81 से .87 के बीच पाई गई, जो पर्याप्त है।

प्रस्तुत परिकल्पना के सत्यापन हेतु प्रसरण-विश्लेषण (।छव्ट।द्ध का प्रयोग किया गया, ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि प्रतिभागियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति पर प्रभाव सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं। चूँकि आत्महत्या-विचार के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक स्थिति को एक महत्त्वपूर्ण भविष्योन्मुख कारक माना जाता है, अतः तीनों सामाजिक-आर्थिक स्तरों (उच्च, मध्यम तथा निम्न) के प्रतिभागियों के मध्य विद्यमान संभावित अंतर की जाँच हेतु उनके आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इन आँकड़ों से प्राप्त सारांश तालिका क्रमांक 4.3 में प्रस्तुत किया गया है:-

तालिका क्रमांक 1

आत्महत्या-विचार मापनी पर तीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूहों के बीच एक-मार्गीय प्रसरण-विश्लेषण का सारांश

परिवर्तन का स्रोत	df	वर्गों का योग	औसत वर्ग	F	P
समूहों के बीच	2	2595.18	1297.59	12.30	.01
समूहों के भीतर	397	41872.98	105.47		
कुल	399	44468.16	1403.06		

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट होता है कि आत्महत्या-विचार मापनी पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के तीन स्तरों-उच्च, मध्यम एवं निम्न के मध्य किए गए प्रसरण विश्लेषण में प्राप्त F मान 12.30 है, जो क df= 2/397 पर 0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति किशोर प्रतिभागियों के आत्महत्या-विचार पर सार्थक प्रभाव डालती है तथा तीनों सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूहों के औसत स्कोरों में पाया गया अंतर मात्र संयोगजन्य नहीं, बल्कि वास्तविक और सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "प्रतिभागियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्महत्या-विचार पर कोई सार्थक प्रभाव पड़ता है" स्वीकृत होती है।

इस तथ्य को और स्पष्ट रूप से समझने हेतु यह आवश्यक था कि तीनों सामाजिक-आर्थिक स्तरों (उच्च, मध्यम एवं निम्न) के अनुसार आत्महत्या-विचार में वास्तविक अंतर की दिशा और प्रकृति का परीक्षण किया जाए। अतः इन समूहों के माध्य एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई, जिसे तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक 2

आत्महत्या-विचार मापनी पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के तीन समूहों के माध्य, मानक विचलन तथा मानक त्रुटि का सारांश

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि
उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति	119	48.30	9.60	12.39
मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति	131	44.80	9.30	14.08
निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति	150	47.20	9.50	15.78

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले समूह का माध्य 48.30 तथा मानक विचलन 9.60 है,

जबकि मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह का माध्य 44.80 एवं मानक विचलन 9.30 पाया गया। इसी प्रकार, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति समूह के लिए माध्य 47.20 तथा मानक विचलन 9.50 प्राप्त हुआ है। इन मानों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले किशोरों की तुलना में उच्च तथा निम्न दोनों ही सामाजिक-आर्थिक स्तरों पर अधिक है। अन्य शब्दों में, सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्यवर्ती स्तर पर आत्महत्या-विचार अपेक्षाकृत कम तथा ऊपरी और निचले दोनों छोरों पर अधिक परिलक्षित होती है। मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि तीनों समूहों में व्यक्तिगत भिन्नता का स्तर लगभग समान है, तथापि औसत अंकों में अंतर यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति आत्महत्या-विचार की तीव्रता से अर्थपूर्ण रूप से संबंधित है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति आत्महत्या-विचार की तीव्रता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले समूह का माध्य 48.30 तथा निम्न SES समूह का माध्य 47.20 पाया जाना यह दर्शाता है कि आत्महत्या-विचार की प्रवृत्ति सामाजिक-आर्थिक निरंतरता के दोनों छोरों—उच्च और निम्न SES—पर अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत, मध्यम SES समूह का माध्य 44.80 सबसे कम पाया गया, जो यह इंगित करता है कि आत्महत्या-विचार की तीव्रता सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य स्तर पर अपेक्षाकृत कम होती है। यह पैटर्न स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि जहाँ निम्न SES समूह आर्थिक असुरक्षा, संसाधन अभाव एवं सामाजिक दबाव के कारण जोखिमग्रस्त है, वहीं उच्च SES समूह प्रतिस्पर्धा, उपलब्धि-दबाव, सामाजिक छवि तथा अपेक्षाओं के तनाव से प्रभावित हो सकता है। तीनों समूहों के मानक विचलन लगभग एक समान पाए गए हैं (9.30 से 9.60), जो यह इंगित करता है कि व्यक्तिगत भिन्नताएँ समान स्तर पर उपस्थित हैं, परंतु समूह माध्यों में अंतर यह पुष्टि करता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति आत्महत्या-विचार की तीव्रता से सार्थक रूप से जुड़ी हुई है।

शैक्षिक उपयोगिता

- यह अध्ययन प्रदर्शित करता है कि विद्यालयों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता केवल आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों तक सीमित नहीं रखनी चाहिए, बल्कि उच्च SES समूह के विद्यार्थियों में भी उपलब्धि-दबाव और तनाव की पहचान आवश्यक है।
- विद्यालयों में *सामाजिक–भावनात्मक अधिगम* (Social Emotional Learning – SEL) के कार्यक्रम सभी SES वर्गों में आत्महत्या-विचार को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य संकेतों—जैसे एकाकीपन, चिंता, निराशा, व्यवहारिक परिवर्तन—की पहचान को शामिल किया जाना चाहिए।
- परिवार–विद्यालय सहयोग कार्यक्रमों के माध्यम से अभिभावकों को यह समझाना आवश्यक है कि आर्थिक स्थिति चाहे जो भी हो, भावनात्मक समर्थन, संवाद और स्वीकृति बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं।
- विद्यालयों में परामर्श सेवाओं (Counseling Services) को SES-निरपेक्ष रूप से सुलभ बनाया जाए, ताकि उच्च एवं निम्न दोनों SES वर्गों के विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित हों।

सुझाव

1. उच्च SES छात्रों में उपलब्धि-दबाव, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक छवि की चिंता को कम करने हेतु विशेष काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाएँ।
2. निम्न SES समूह के लिए सामुदायिक सहायता योजनाएँ, छात्रवृत्ति, संसाधन सहायता तथा मनोवैज्ञानिक समर्थन सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
3. सभी SES वर्गों के विद्यार्थियों के लिए नियमित *माइंडफुलनेस*, तनाव-प्रबंधन एवं जीवन-कौशल (Life Skills) कार्यक्रम लागू किए जाएँ।
4. विद्यालयों में *गोपनीय मानसिक स्वास्थ्य हेल्पडेस्क* संचालित की जाए, जिससे विद्यार्थी संकोच के बिना सहायता प्राप्त कर सकें।
5. अभिभावकों के लिए जागरूकता कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ, जिनमें संवाद, सहानुभूति, बच्चों की अपेक्षाओं का प्रबंधन तथा भावनात्मक समर्थन के महत्व पर बल दिया जाए।
6. स्कूल–आधारित मानसिक स्वास्थ्य नीति (School Mental Health Policy) विकसित की जाए, जिसमें SES-संबंधित जोखिम कारकों की पहचान हेतु दिशा-निर्देश शामिल हों।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

- विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2020). *आत्महत्या रोकथाम पर वैश्विक रिपोर्ट*. जिनेवा: WHO।
- सिंह, आर., एवं जोशी, एस. (2017). सामाजिक-आर्थिक स्थिति और किशोर मानसिक स्वास्थ्य. *भारतीय मनोविज्ञान जर्नल*, 44(2), 115–129।
- कुमार, वी. (2017). आर्थिक अभाव और आत्महत्या-विचार का अध्ययन. *शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा*, 11(3), 88–99।
- वर्मा, एस. (2019). आर्थिक वंचना एवं भावनात्मक संकट. *समाज एवं मनोविज्ञान पत्रिका*, 6(1), 44–56।
- ठाकुर, डी. (2021). युवा मानसिक स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारक. *सामाजिक अनुसंधान पत्रिका*, 18(1), 55–70।
- गुप्ता, एम., और शर्मा, आर. (2020). किशोरों में सामाजिक-आर्थिक असमानताएं और आत्महत्या के विचार। जर्नल ऑफ़ मेंटल हेल्थ स्टडीज़, 12(3), 110–124।
- पांडे, जे. (2016). आर्थिक असमानता और युवाओं का इमोशनल संकट। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी, 18(2), 201–214।
- लोपेज़, एम., और मार्टिनेज़, आर. (2021). SES और किशोरों में आत्महत्या की प्रवृत्ति: एक तुलनात्मक विश्लेषण। यूरोपियन जर्नल ऑफ़ चाइल्ड साइकोलॉजी, 9(1), 50–62।

- देवांगन, के., और पांडे, एस. (2022). छत्तीसगढ़ के युवाओं में सामाजिक-आर्थिक कारक और आत्महत्या की प्रवृत्ति। एजुकेशन एंड सोसाइटी, 15(4), 139–152।
- बेक, ए. टी. (2015)। सुसाइडल आइडिएशन स्केल मैनुअल। न्यूयॉर्क: साइकोलॉजिकल कॉर्प